



पर्दे की रानी उपन्यास में नारी मनोविज्ञान के पहलू के संदर्भ में

प्रा.डॉ.शेख शरफोद्दीन फक्रोद्दीन

हिंदी विभागाध्यक्ष सहयोगी प्रोफेसर
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
बदनापूर, जि. जालना (महाराष्ट्र)

सार (Abstract)

पर्दे की रानी' उपन्यास मानव-मन की जटिलताओं, स्त्री-मनोविज्ञान, सामाजिक बंधनों तथा व्यक्तित्व-संघर्ष का प्रभावशाली चित्रण प्रस्तुत करता है। इसमें पात्रों की मानसिक अवस्थाएँ, कुंठा, प्रेम, भय, असुरक्षा, आत्मसंघर्ष, हीनभावना तथा आत्मसम्मान की खोज प्रमुख रूप से दिखाई देती है। यह शोध-पत्र मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उपन्यास के पात्रों और उनके व्यवहार का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्द: मनोविज्ञान, स्त्री-चेतना, व्यक्तित्व, मानसिक संघर्ष, अवचेतन, सामाजिक बंधन।

प्रस्तावना

हिन्दी उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की परंपरा आधुनिक काल में विशेष रूप से विकसित हुई। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में बाहरी घटनाओं की अपेक्षा पात्रों के अंतर्मन, उनकी भावनाओं और मानसिक द्वंद्व को अधिक महत्व दिया जाता है। 'पर्दे की रानी' में भी पात्रों का आंतरिक जीवन कथा का केंद्र है। हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की आरंभकर्ता इलाचंद्र जोशी का जन्म १३ दिसम्बर १९०३ को तत्कालीन उत्तर प्रदेश के अल्मोड़ा (अब उत्तराखंड) में हुआ। जोशी जी ने अधिकांश साहित्यकारों की तरह अपनी साहित्यिक यात्रा काव्य-रचना से ही आरम्भ की। पर्वतीय-जीवन विशेषकर वनस्पतियों से आच्छादित अल्मोड़ा और उसके आस-पास के पर्वत-शिखरों ने और हिमालय के जलप्रपातों एवं घाटियों ने, झीलों और नदियों ने इनकी काव्यात्मक संवेदना को सदा जागृत रखा।

अध्ययन में रुचि रखन वाले इलाचन्द्र जोशी ने छोटी उम्र में ही भारतीय महाकाव्यों के साथ-साथ विदेश के प्रमुख कवियों और उपन्यासकारों की रचनाओं का अध्ययन कर लिया था। औपचारिक शिक्षा में रुचि न होने के कारण इनकी स्कूली शिक्षा मैट्रिक के आगे नहीं हो सकी, परन्तु स्वाध्याय से ही इन्होंने अनेक भाषाएँ सीखीं। घर का वातावरण छोड़कर इलाचन्द्र जोशी कोलकाता पहुँचे। वहाँ उनका सम्पर्क शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय से हुआ।

जोशी जी एक उपन्यासकार के रूप में ही अधिक प्रतिष्ठित हैं। उनके कवि, आलोचक या कहानीकार का रूप बहुत खुलकर सामने नहीं आया। इनके उपन्यासों का आधार मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद की संज्ञा पाता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों पर -फ्रायड के चिन्तन का अधिक प्रभाव पड़ा, किन्तु इलाचन्द्र जोशी के साथ यह बात पूरी तरह से लागू नहीं होती। जोशी जी ने पाश्चात्य लेखकों को भी बहुत पढ़ा था, पर रूसी उपन्यासकारों-टॉल्स्टॉय और दॉस्तोवस्की का प्रभाव अधिक लक्षित होता है। यही कारण है कि उनके औपन्यासिक चरित्रों में आपत्तिजनक प्रवृत्तियाँ होती हैं, किन्तु उनके चरित्र नायकों में सदगुणों की भी कमी नहीं होती। उदारता, दया, सहानुभूति आदि उनके अन्दर यथेष्ट रूप में पाए जाते हैं। ये नायक इन्हीं कारणों से असामाजिक कार्य भले कर बैठते हैं, किन्तु बाद में वे पश्चाताप भी करते हैं। 'जैनेन्द्र , इलाचन्द्र जोशी तथा अज्ञेय ने हिन्दी साहित्य को एक नया मोड़ दिया था। ये मूलतः मानव मनोविज्ञान के लेखक थे जिन्होंने हिन्दी साहित्य को बाहरी घटनाओं की अपेक्षा मन के भीतर के संसार की ओर मोड़ा था। इलाचन्द्र जोशी के अधिकतम उपन्यास उनके पात्रों के मनोलोक की गाथाएँ हैं जिनका अपने बाहरी संसार से टकराव होता है।'

मनोवैज्ञानिक भावों का विश्लेषण

● अंतर्द्वंद्व

मुख्य पात्र सामाजिक मर्यादाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संघर्ष करता है। यही मानसिक द्वंद्व उसके निर्णयों और व्यवहार को प्रभावित करता है।

● स्त्री-मनोविज्ञान

उपन्यास में स्त्री पात्रों के मन की संवेदनाएँ, आत्मसम्मान, प्रेम, त्याग, असुरक्षा तथा सामाजिक दबावों का गहन चित्रण मिलता है। वे केवल सामाजिक भूमिका तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि अपने अस्तित्व की खोज करती हैं।

● प्रेम और आकर्षण

प्रेम केवल भावनात्मक अनुभव नहीं बल्कि मानसिक परिवर्तन का माध्यम बनता है। पात्र प्रेम के कारण आशा, निराशा, ईर्ष्या, असुरक्षा और आत्मविश्वास जैसी विभिन्न मनोस्थितियों से गुजरते हैं।

● हीनभावना

कई पात्र स्वयं को सामाजिक, आर्थिक अथवा पारिवारिक कारणों से कमतर महसूस करते हैं। यह हीनभावना उनके व्यक्तित्व-विकास में बाधा बनती है।



● भय और असुरक्षा

भविष्य की चिंता, सामाजिक आलोचना तथा संबंधों के टूटने का भय पात्रों की मानसिक स्थिति को प्रभावित करता है।

● कुंठा और दमन

अधूरी इच्छाएँ और सामाजिक प्रतिबंध मानसिक कुंठा उत्पन्न करते हैं। दबी हुई भावनाएँ समय-समय पर व्यवहार में प्रकट होती हैं।

● आत्मसम्मान और आत्मपहचान

उपन्यास का महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक पक्ष यह है कि पात्र स्वयं की पहचान स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

फ्रायड के सिद्धांत के आधार पर अध्ययन

सिगमंड फ्रायड के अनुसार मानव-व्यवहार चेतन, अचेतन तथा अवचेतन मन से संचालित होता है। उपन्यास में पात्रों के अनेक निर्णय उनकी दबी हुई इच्छाओं, स्मृतियों और मानसिक संघर्षों से प्रभावित दिखाई देते हैं।

युंग के व्यक्तित्व सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति अपने अनुभवों और सामूहिक अचेतन से प्रभावित होता है। उपन्यास के पात्र सामाजिक परंपराओं और व्यक्तिगत अनुभवों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं।

इलाचन्द्र जोशी का यह प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यास -पर्दे की रानी- में इसी निरंजना की कथा है जो हॉस्टल में आते ही हर किसी की जिज्ञासा का केन्द्र बन जाती है। अपने कमरे में पर्दे डालकर रहती है और अपनी हमउम्र लड़कियों की तरह पत्रिकाएँ और रोमांटिक किताबों के बजाय गहन साहित्यिक और दार्शनिक ग्रंथ पढ़ती है, जो मानती है कि दुख ही जीवन है। उपन्यास दो भागों में बँटा हुआ है। पहले भाग में निरंजना को लेकर जो प्रश्न खड़े होते हैं, दूसरे भाग में उनके उत्तर मिलते हैं जहाँ निरंजना की सम्पूर्ण कथा विस्तार से पढ़ने को मिलती है। मालूम होता है कि वह दरअसल एक वेश्या-पुत्री है और अपनी माँ की तरह उसने भी सामर्थ्य-सम्पन्न पुरुषों से कुछ कम पीड़ा नहीं पाई है। हॉस्टल में सहेली बनी शीला भी आगे चलकर उसकी कहानी का हिस्सा बनती है जो सुशील भारतीय नारी समाज के प्रतिनिधि के तौर पर निरंजना के स्वतंत्रचेता, निडर और आधुनिक व्यक्तित्व को और साफ़ ढंग से उभारती है। पर्दे की रानी हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार इलाचंद्र जोशी द्वारा रचित एक मील का पत्थर है। यह मुख्य रूप से मनोविश्लेषण, दमित इच्छाओं (Repressed



Desires), और मानव मन की जटिलताओं पर केंद्रित है, जहाँ रहस्य और यथार्थ का अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है। उपन्यास की कथा का केंद्र बिंदु 'निरंजना' नामक युवती है, जो एक हॉस्टल में अनाथ के रूप में आती है। उसके रहस्यमयी हाव-भाव और ठाठ-बाट को देखकर सभी उसे किसी अमीर घराने या राजा की बेटी समझते हैं। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, उसके अतीत के गहरे और दबे हुए रहस्य उजागर होते हैं। कथानक पाठक को जिज्ञासा और कौतूहल से बांधे रखता है। निरंजना उपन्यास की मुख्य पात्र, जो एक रहस्यमयी व्यक्तित्व की धनी है। उसके चरित्र के माध्यम से जोशी जी ने स्त्री मन के द्वंद्व और सामाजिक वर्जनाओं के कारण उत्पन्न कुंठाओं को उभारा है। इंद्रमोहन कथा का मुख्य पुरुष पात्र, जो 'शीला' और 'निरंजना' दोनों के प्रेम में उलझ जाता है। वह अनेक स्त्रियों के प्रेम में पड़कर अपने अवचेतन को जकड़ लेता है और अपनी अधूरी इच्छाओं के कारण कुंठा से भर जाता है।

मनोविश्लेषण (Psychoanalysis): यह सिगमंड फ्रायड (Sigmund Freud) की मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित है। इसमें पात्रों की क्रियाओं के पीछे उनके अवचेतन मन (Subconscious Mind) की दमित वासनाओं और कुंठाओं को कारण माना गया है।

दमन और वर्जनाएँ: तत्कालीन समाज में महिलाओं और पुरुषों पर थोपे गए सामाजिक नियमों, नैतिकता और 'पर्दे' के पीछे छिपी वास्तविकताओं का चित्रण किया गया है।

प्रेम और कुंठा: नायक इंद्रमोहन का दो स्त्रियों के प्रति प्रेम और उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न मानसिक उथल-पुथल का गहरा विश्लेषण किया गया है। इलाचंद्र जोशी की भाषा शैली अत्यंत गंभीर और वर्णनात्मक है। उन्होंने पात्रों के मानसिक विश्लेषण को शब्दों में पिरोने के लिए विस्तृत और भावपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है। कहानी में रहस्य (Suspense) का पुट होने के कारण इसकी शैली काफी रोचक है।

'पर्दे की रानी' हिन्दी का एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसमें लेखक ने मानव-मन की जटिलताओं, प्रेम, आकर्षण, सामाजिक बंधनों, स्त्री-पुरुष संबंधों और व्यक्ति के आंतरिक संघर्ष का सूक्ष्म चित्रण किया है। उपन्यास की कथा केवल घटनाओं पर आधारित नहीं है, बल्कि पात्रों की मानसिक अवस्थाओं और उनके व्यवहार के कारणों को समझने का प्रयास



करती है। उपन्यास की कथा ऐसे पात्रों के इर्द-गिर्द घूमती है जो बाहरी सामाजिक जीवन और अपने भीतर की इच्छाओं के बीच संघर्ष करते हैं। "पर्दा" यहाँ केवल भौतिक आवरण नहीं, बल्कि मनुष्य के मन, व्यक्तित्व और सामाजिक दिखावे का भी प्रतीक है। पात्र अपने वास्तविक व्यक्तित्व को छिपाकर जीते हैं, जिससे उनके जीवन में तनाव, भ्रम और मानसिक द्वंद्व उत्पन्न होता है।

इलाचंद्र जोशी हिन्दी साहित्य के प्रमुख मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों में अग्रणी माने जाते हैं। उनके उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे बाहरी घटनाओं की अपेक्षा मानव-मन की जटिलताओं, मानसिक द्वंद्व, दबी हुई इच्छाओं और भावनात्मक संघर्षों को अधिक महत्व देते हैं। पर्दे की रानी इसी परंपरा का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें लेखक ने व्यक्ति के आंतरिक जीवन, उसकी संवेदनाओं तथा सामाजिक जीवन के बीच उत्पन्न होने वाले संघर्ष का अत्यंत सूक्ष्म और कलात्मक चित्रण किया है। यह उपन्यास केवल प्रेम या सामाजिक संबंधों की कथा नहीं है, बल्कि मनुष्य के अंतर्मन में चलने वाली उन प्रक्रियाओं का चित्रण है जो उसके व्यवहार, निर्णय और व्यक्तित्व को निरंतर प्रभावित करती हैं।

उपन्यास का शीर्षक 'पर्दे की रानी' अपने आप में अत्यंत प्रतीकात्मक है। यहाँ "पर्दा" केवल भौतिक आवरण का संकेत नहीं करता, बल्कि यह मनुष्य के मन, उसकी छिपी हुई इच्छाओं, भावनाओं और सामाजिक आडंबरों का भी प्रतीक है। प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर अनेक ऐसे भावों को छिपाकर रखता है जिन्हें वह समाज के सामने व्यक्त नहीं कर पाता। यही कारण है कि उपन्यास में पात्रों का वास्तविक व्यक्तित्व उनके बाहरी व्यवहार से भिन्न दिखाई देता है। लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य का जीवन केवल सामाजिक नियमों से संचालित नहीं होता, बल्कि उसके अचेतन मन में छिपी इच्छाएँ, स्मृतियाँ और मानसिक अनुभव भी उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

उपन्यास का कथानक पात्रों के मानसिक विकास के साथ आगे बढ़ता है। इसमें घटनाओं की अपेक्षा पात्रों की मनःस्थितियों, उनकी भावनाओं और मानसिक प्रतिक्रियाओं का अधिक महत्व है। लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि मनुष्य का प्रत्येक निर्णय उसके भीतर चल रहे मानसिक संघर्ष का परिणाम होता है। प्रेम, आकर्षण, भय, असुरक्षा, ईर्ष्या, आत्मग्लानि, हीनभावना और आत्मसम्मान जैसे अनेक मनोवैज्ञानिक भाव उपन्यास के पात्रों में स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं। यही भाव कथा को गहराई और प्रभाव प्रदान करते हैं।



उपन्यास में प्रेम को केवल भावनात्मक आकर्षण के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्ति के मानसिक और नैतिक विकास की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रेम पात्रों के जीवन में आशा, विश्वास और आत्मीयता का संचार करता है, किंतु उसके साथ ही असुरक्षा, संकोच, भय और मानसिक अस्थिरता भी उत्पन्न होती है। लेखक ने यह दिखाया है कि प्रेम मनुष्य के व्यक्तित्व को परिष्कृत भी करता है और उसकी कमजोरियों को उजागर भी करता है। इसलिए प्रेम का चित्रण केवल रोमांटिक नहीं, बल्कि गहरे मनोवैज्ञानिक स्तर पर किया गया है।

उपन्यास की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता पात्रों का अंतर्द्वंद्व है। प्रत्येक पात्र अपनी इच्छाओं और सामाजिक मर्यादाओं के बीच संघर्ष करता दिखाई देता है। समाज की अपेक्षाएँ और व्यक्ति की निजी आकांक्षाएँ अनेक बार एक-दूसरे के विरोध में खड़ी हो जाती हैं, जिससे मानसिक तनाव उत्पन्न होता है। यह तनाव पात्रों के व्यवहार, निर्णय और संबंधों को प्रभावित करता है। इलाचंद्र जोशी ने इस मानसिक द्वंद्व को अत्यंत सूक्ष्मता और यथार्थ के साथ चित्रित किया है।

स्त्री-मनोविज्ञान का चित्रण भी उपन्यास की उल्लेखनीय उपलब्धि है। लेखक ने स्त्री पात्रों को केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें संवेदनशील, आत्मसम्मानी और आत्मचेतन व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। स्त्री पात्र अपने जीवन के निर्णयों, भावनात्मक अनुभवों और सामाजिक बंधनों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करती हैं। उनके भीतर प्रेम, त्याग, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की आकांक्षा एक साथ विद्यमान रहती है। यही कारण है कि उपन्यास का स्त्री-चित्रण अत्यंत यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है।

यदि इस उपन्यास का अध्ययन सिग्मंड फ्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धांत के आलोक में किया जाए, तो स्पष्ट होता है कि पात्रों का व्यवहार उनके अचेतन मन और दबी हुई इच्छाओं से प्रभावित होता है। कई बार वे स्वयं भी यह नहीं समझ पाते कि उनके निर्णयों के पीछे कौन-सी मानसिक शक्तियाँ कार्य कर रही हैं। इसी प्रकार कार्ल युंग के सामूहिक अचेतन तथा अल्फ्रेड एडलर की हीनभावना संबंधी अवधारणाएँ भी इस उपन्यास के पात्रों को समझने में सहायक सिद्ध होती हैं। इस प्रकार पर्दे की रानी केवल साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि मानव-मन के गहन अध्ययन का दस्तावेज़ भी है।



भाषा और शैली की दृष्टि से भी यह उपन्यास अत्यंत प्रभावशाली है। इलाचंद्र जोशी की भाषा साहित्यिक होने के साथ-साथ सहज, प्रवाहपूर्ण और भावप्रधान है। वे लंबे आत्मविश्लेषणात्मक वर्णनों, प्रभावशाली संवादों तथा सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण के माध्यम से पात्रों की मानसिक अवस्थाओं को सजीव बना देते हैं। उनकी शैली पाठक को पात्रों के अंतर्मन तक पहुँचने का अवसर देती है।

निष्कर्ष :

समग्र रूप से पर्दे की रानी हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक उपन्यास है, जिसमें मानव-मन की जटिलताओं, सामाजिक बंधनों, स्त्री-चेतना, प्रेम, आत्मसंघर्ष और व्यक्तित्व-विकास का अत्यंत गहन एवं यथार्थपूर्ण चित्रण मिलता है। यही कारण है कि यह उपन्यास हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की परंपरा में एक विशिष्ट और स्थायी स्थान रखता है तथा आज भी शोध और आलोचना की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

संदर्भ (References)

१. फ्रायड, सिगमंड – The Interpretation of Dreams.
२. युंग, कार्ल जी. – Modern Man in Search of a Soul.
३. गोपाल राय – हिन्दी उपन्यास का इतिहास।
४. shabd-braham.com
५. धनराज मंधाने – हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास।
६. Cambridge University Press & Assessment
७. भारतभूषण अग्रवाल – हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव।